"अपनी-अपनी जाति को अपना-अपना धर्म घोषित कर लो"

रोहतक छेड़छाड़ मामले में जब तक दूसरा वीडियो सामने नहीं आया था, किसी भी मीडिया वाले या समाज के सामाजिक ज्ञानी ने इस मामले में यह नहीं देखा कि तीनों लड़के जाटों के हैं, और ना ही कोई यह बात उठाते हुए सामने आया कहने कि जाति के नाम पर *(जाट खुद तो बोले ही नहीं)* लड़के फंसाये जा रहे हैं। लेकिन जैसे ही मामले की छानबीन बढ़ती गई और वीडियो पर वीडियो, चश्मदीद गवाह और पीछे के पीड़ित अपने-अपने दुखड़े ले के आये तो झट से इसमें जाति घुसा दी जाती है।

मेरे एक नजदीकी मित्र के अनुसार बैरागी *(इस मामले की लड़कियां इसी जाति की बताई गई)* भी बिश्नोईयों की तरह जाट से ही निकली हुई जाति है। यानी एक ही अंश की दो जातियों में आज इतना भी समन्वय नहीं कि उस समाज के लोग बिना न्यायालय व् पुलिस की रिपोर्टों का इंतज़ार किये, इस मामले को जातिगत रंग देने पर तुले हुए हैं? क्या वो लोग अपनी स्वछंद मति से ऐसा कर रहे हैं, या फिर कोई जातिपाति के नाम पर अपनी रोटियां सेंकने वाला उनके पीछे उनको उकसा रहा है?

क्या दोनों समाजों के सयानों की जिम्मेदारी नहीं बनती कि तब तक संयम बना के रखें जब तक न्यायालय का फैसला ना आ जाए? क्या सयाने आजकल ऐसे होने लगे हैं कि वो एक भी बयान देते वक्त यह तक नहीं सोचते कि तुम्हारे पर दोनों समाजों की समरसता बनाये रखने की जिम्मेदारी है, इसलिए एक-एक शब्द बड़ी ही नैतिक जिम्मेदारी से बोला जाए?

अन्यथा अगर ऐसे एक मामले से ही दो जातियों का आपस का विश्वास डगमगाने लगा जाता है तो फिर अपनी-अपनी जाति को ही अपना-अपना धर्म क्यों नहीं घोषित कर लेते? इससे कम से कम इन दोनों जातियों के बीच इस नाजुक वक्त में जो जहर बोने वाले गैर-जाट या गैर-बैरागी हैं वो तो रोटियां नहीं सेंक पाएंगे|

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 09/12/14